लेख

बेहतर शहरी बस्तियां: बेहतर स्वास्थ्य

बीजल भट्ट

अहमदाबाद की बस्तियों में रहने वाले बस्तीवासियों के रिहाइशी हालात नई मूलभूत सुविधाओं, रोज़गार के मौकों व सामाजिक सशक्तता के चलते बेहतरी की ओर अग्रसर हैं। इससे लोगों का स्वास्थ्य अच्छा हुआ है और दवाओं पर खर्चों में कमी आई है। स्वास्थ्य के सामाजिक कारकों पर सक्रियता से काम करने से ही दीर्घकालीन परिवर्तन लाए जा सकते हैं।" गुजरात शहर के 'परिवर्तन' कार्यक्रम के पीछे यही सोच विद्यमान है। यह कार्यक्रम सन 1995 में संजयनगर बस्ती में शुरू किया गया था जहां 181 परिवार बसते थे। 'अहमदाबाद परिवर्तन कार्यक्रम' जिसे 'स्लम नेटवर्किंग प्रोजेक्ट' के नाम से भी जाना जाता है, के अंतर्गत यहां मूलभूत सेवाएं जिसमें पानी व स्वच्छता भी शामिल थी, कम लागत पर बस्तीवासियों को मुहैया कराई गईं। अहमदाबाद नगरपालिका के नेतृत्व मे यह परियोजना समुदायों, गैर-सरकारी संगठनों तथा निजी खण्ड संस्थाओं को एक अनोखी भागीदारी निभाने के लिए साथ लाती है।

शहर में 129000 अनौपचारिक बस्तियां व 1380 चॉलें हैं। इनमें तकरीबन तीन लाख परिवार यानी शहर की चालीस प्रतिशत जनसंख्या वास करती है। इनमें से अधिकांश के पास मूल शहरी सेवाओं तक पहुंच न के बराबर है। 'स्लम नेटवर्किंग परियोजना' इस सोच पर आधारित है कि सेवाएं तभी प्रदान की जानी चाहिए जब उनके लिए स्पष्ट मांग की जाए। इसके लिए मुख्य ज़ोर समुदाय की तरफ से आना चाहिए।

यह परियोजना प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर वास्तविक 'कीमत' लगाती है जिससे समुदाय निवेश के स्वभाव व लागत का जानकारीयुक्त चयन कर सके। यह परियोजना इसमें शामिल होने वाली हर बस्ती के लिए उपलब्ध है तथा सभी प्रदत्त सेवाएं शहरी सुविधाओं से जुड़ी हैं। 'परिवर्तन' ने अब तक सैंतालीस बस्तियों में पचास हज़ार लोगों के जीवन को सुधारने में मदद की है।

'परिवर्तन' स्थानीय स्तर पर सेवाएं प्रदान करता है और से सेवाएं शहरी स्तर पर मौजूद सुविधाओं के साथ जुड़ जाती हैं। इनमें सड़क व रास्ता बनाना, घरों तक पहुंचने वाली जल सुविधाएं, व्यक्तिगत घरों तक जुड़ने वाली सीवर लाइनें, स्ट्रीट लाईट, ठोस कचरा प्रशासन, शौचालय ब्लॉक तथा आंधी-बारिश में पानी के निकास की सुविधाएं इत्यादि शामिल हैं। इनके लिए वित्तीय मदद समुदाय व शहर दोनों स्तरों पर मुहैया कराई जाती है। इसका अर्थ यह है कि 'परिवर्तन' उन जगहों पर सेवाएं प्रदान करता है जहां मांग अधिक होती है और इन सेवाओं का प्रशासन भी सबसे निचले स्तर पर प्रोत्साहित किया जाता है। इसके मायने यह भी है कि समुदाय तकनीकों, अनुबंध और प्रशासन के इंतज़ामों का चुनाव कर सकते हैं। भागीदारी करने वाले समुदाय सामुदायिक स्तर पर अपनी परियोजनाओं के प्रबंधन के लिए समितियां व सामुदायिक संगठनों का गठन कर सकते हैं।

महिला आवास सेवा ट्रस्ट, एक गैर-सरकारी संगठन है जिसकी शुरूआत 1944 में अहमदाबाद की गरीब स्वरोज़गार करने वाली महिलाओं की विशेष आवासीय सेवाओं की मांग को मद्देनज़र रखकर की गई थी। नगरपालिका के साथ सहभागिता करके महिला आवास सेवा ट्रस्ट ने 'परिवर्तन' के तहत लगभग चालीस परियोजनाएं पूरी कर ली हैं।

'सेवा' की सामाजिक सुरक्षा समन्वयक मीराई चैटर्जी के अनुसार, 'बस्तियों की प्रगति गरीबी घटाने में सहायक होती है। एक गरीब परिवार के लिए उनका घर एक उत्पादक जागीर है। वह उनका कार्यक्षेत्र है। लिहाज़ा घर और उसके माहौल में

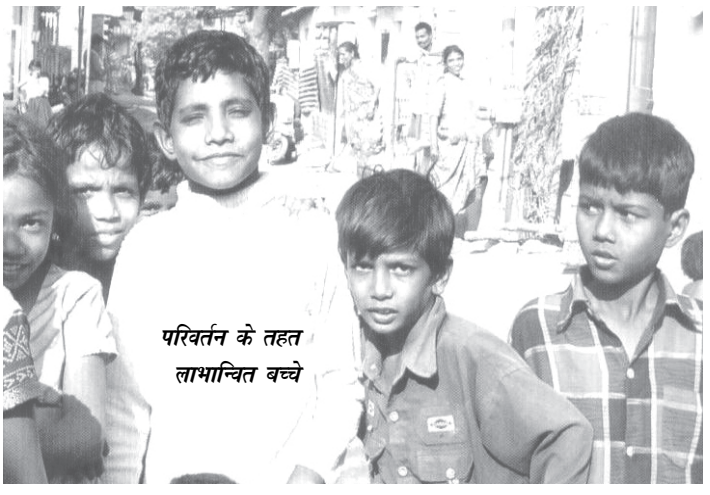

परिवर्तन के तहत लाभान्वित बच्चे

फ़ोटो: गुजरात महिला आवास सेवा ट्रस्ट

बेहतरी व सुरक्षा उनके रोज़गार में एक अहम योगदान प्रदान करती है'। उनका अनुभव यह भी रहा है कि बस्तियों में घरों व मूल भौतिक सुविधाओं के अभाव में स्वास्थ्य सेवाओं का प्रभाव सीमित रहता है।

आधारभूत सुविधाओं का विकास तथा मूल सुख सुविधाओं की मौजूदगी न केवल स्वास्थ्य, शिक्षा और आमदनी को प्रभावित करती है बल्कि इसका प्रभाव शहरी गरीबों के सामाजिक जीवन और सशक्तता पर भी दिखाई देता है। 'परिवर्तन' द्वारा बस्तियों में आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता ने बस्तीवासियों के जीवन में अनेक बदलाव किए हैं। अब यहां बेहतर जल व सीवर कनेक्शन, शौचालय, रास्ते व स्ट्रीट लाइट हैं। इसके अलावा, अब स्कूलों में हाज़िरी बढ़ी है तथा निरक्षरता में कमी आई है; रोज़गार के मौके भी अधिक हैं। स्वास्थ्य के नज़रिये से बीमारी व रोगों के आंकड़े 17% से घटकर 7% हो गये हैं और हर घर में मासिक स्वास्थ्य खर्च पर 121 रुपयों की जगह 87 रुपये व्यय हो रहे है। रोज़ाना नहाने वाले लोगों का अनुपात 66% से बढ़कर 98% हुआ है।

लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का यह प्रयास बहु-पक्षीय है और इस तथ्य का अच्छा उदाहरण भी है कि स्वास्थ्य के सामाजिक कारकों का लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। आधारभूत सेवाओं, रोज़गार, शिक्षा व सामाजिक सशक्तिकरण सभी पहलुओं पर ध्यान देने और इन्हें उन्नत बनाने से बस्तियों में रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है।

बीजल भट्ट *महिला सेवा आवास अहमदाबाद ट्रस्ट की समन्वयक हैं।*